दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल II- मध्यकालीन भारत)

DTVF/18(JS)–OPS-H2

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): mintu lal meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2 / 25/6/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

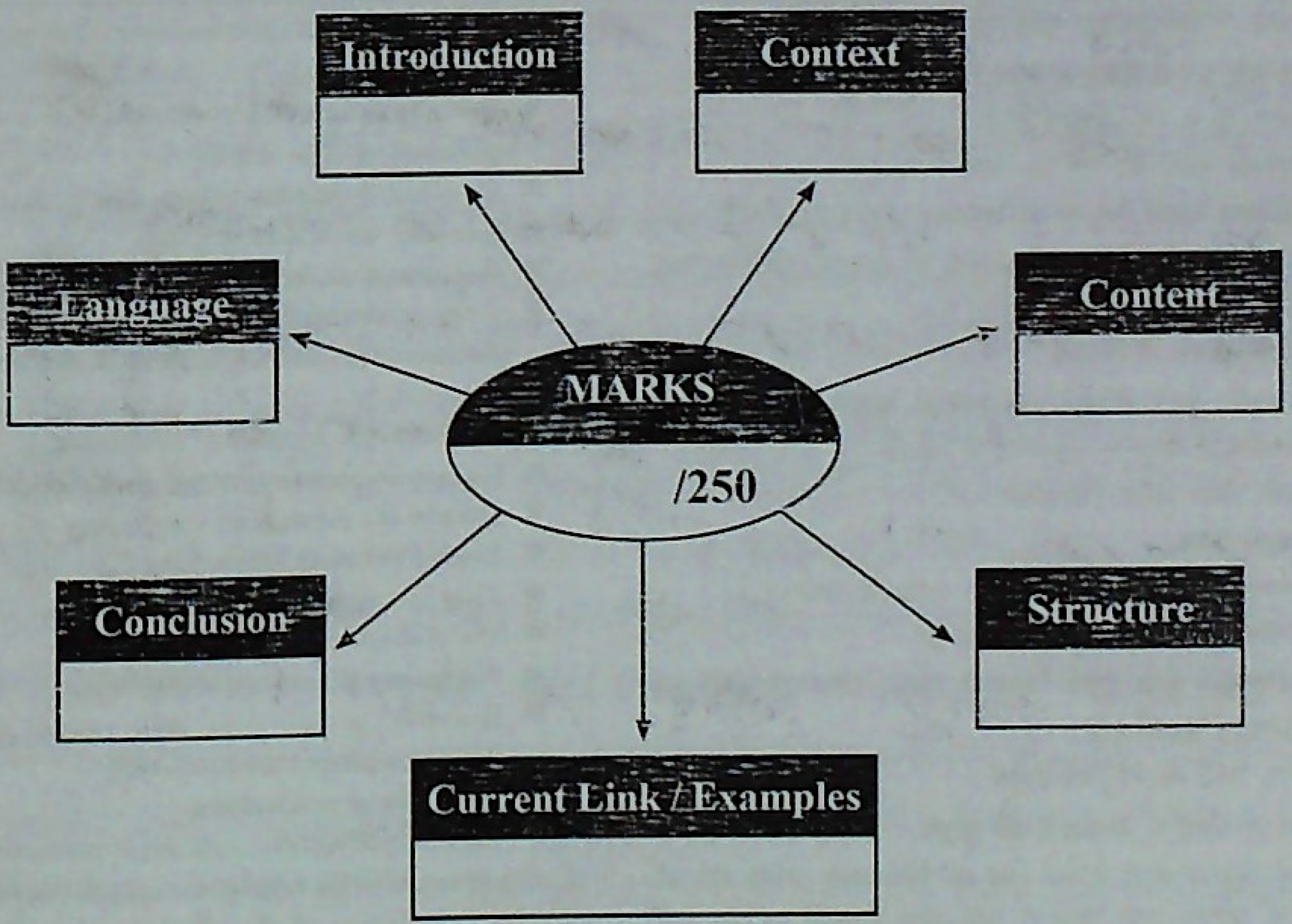

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - A / SECTION - A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. आपको दिये गए मानचित्र (पृष्ठ नं. 5) पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार दिये गए हैं: $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

Identify the following places marked on the map supplied to you (on page no. 5) and write a short note in about 30 words on each of them in your Question-cum-Answer Booklet. Location hints for each of the places marked on the map are given below serial wise: $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

(i) एक ताम्रपाषाणकालीन स्थल

A Chalcolithic site

नवदाटोली: यह मध्यप्रदेश के खरगौन जिले में स्थित है। यहाँ से गेहूँ, मसूर, उड़द, कलथी एवं बेर जैसे अनाज प्राप्त है। यहाँ से जितने अनाज प्राप्त हुए हैं उतने किसी अन्य स्थान से प्राप्त नहीं हुए हैं।

(ii) एक हड़प्पाई स्थल

A Harappan site

माण्डा:

यह जम्मू एवं कश्मीर के अखनूर क्षेत्र में स्थित है। यह एक परवर्ती हड़प्पाकालीन स्थल है। यह हड़प्पा सभ्यता की उत्तरी सीमा निर्धारित करता है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) एक चोलकालीन बंदरगाह

A Port of Chola period

कावेरीपट्टनम् / पुहार :-

यह वर्तमान में तमिलनाडु के नागपट्टनम् जिले में स्थित है। संगमकालीन ग्रंथों में इसकी आर्थिक समृद्धि का वर्णन प्राप्त होता है। टॉलमी के ऐतिहासिक ग्रंथ ज्योग्राफी में इसे 'खबेरीज' के नाम से उल्लेखित किया गया है।

(iv) एक मौर्यकालीन स्तम्भलेख

A pillar inscription of Mouryan period

लौरिया अरेराज :

यह बिहार राज्य के पूर्वी चम्पारण जिले में स्थित है। जहाँ से अशोक का स्तम्भ लेख प्राप्त हुआ है। यह स्तम्भ पाटलिपुत्र से नेपाल जाने वाले मार्ग का राजचिह्न था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) एक प्रसिद्ध जैन स्थल
A famous Jain site

उदयगिरी – खण्डगिरी:

यह वर्तमान में ओडिशा राज्य के भुवनेश्वर जिले में स्थित है। कलिंग शासक खारवेल ने इन पहाड़ियों पर जैन विहारों का निर्माण ~~प्राप्त हुआ~~ करवाया।

यहीं से खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख प्राप्त हुआ है। उदयगिरी में 18 तथा खण्डगिरी में 15 गुफाएँ है।

(vi) एक महाजनपदकालीन स्थल
A Mahajanapad site

अतरंजीखेड़ा:

यह वर्तमान में उत्तरप्रदेश राज्य के एटा जिले में स्थित है। यहाँ से भारत में सर्वप्रथम लोहे के अवशेष प्राप्त हुए है। यहाँ से चित्रित धूसर मृद्भाण्ड के साथ-साथ चावल एवं जौ जैसे अनाज प्राप्त ~~हुआ~~ हुए हैं। इससे यहाँ कृषि कार्य के प्रचलन के बारे में पता चलता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(vii) एक प्रसिद्ध बौद्ध स्थल
A famous Buddhist site

सारनाथ :
वर्तमान में यह उत्तरप्रदेश के वाराणसी जिले में स्थित है। महात्मा बुद्ध ने यहीं अपना प्रथम उपदेश दिया था जिसे धर्म-चक्रप्रवर्तन के नाम जाना जाता है।
यहाँ से प्राप्त अशोक के स्तम्भ के शीर्ष पर अंकित चार सिंहों की आकृति को भारत का राजचिह्न बनाया गया है। यहाँ गुप्तकाल के बना धमेख स्तूप भी है।

(viii) एक मंदिर स्थल
A Temple site

सोमनाथ :
यह वर्तमान में गुजरात के सोमनाथ जिले में यह स्थित है। यह मन्दिर अपनी वैभव एवं धनसंपदा के लिए जाना जाता था।
इसी धन प्राप्ति के लिए ~~महमूद~~ महमूद गजनवी ने 17 बार आक्रमण किये और मंदिर को लूटा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ix) एक प्रसिद्ध गुहा स्थल

A famous cave site

भाजा:

यह महाराष्ट्र राज्य में पुणे के निकट लोनावला में स्थित है। यह स्थल बौद्ध धर्म के समर्पित रॉक कट गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है।

यहाँ से सबसे पुराना चैत्य की प्राप्त हुआ है जिसका निर्माण द्वितीय शताब्दी ई.पू. में हुआ था।

(x) एक दुर्ग

A Fort

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xi) एक धार्मिक स्थल
A religious place

कांचीपुरम :
यह तमिलनाडु का एक जिला है। यह पल्लव वास्तुकला का प्रमुख केन्द्र था। पल्लव शासकों के यहाँ बैकुण्ठपेरूमल मंदिर एवं कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण कि करवाया। यह संगमकालीन चोलों की राजधानी भी थी।

(xii) एक राजधानी
A Capital City

मथुरा :
यह वर्तमान में उत्तरप्रदेश का एक जिला है। यह छठी शताब्दी ई.पू. में शूरसेन महाजनपद की राजधानी था। आगे चलकर कुषाण शासक कनिष्क ने भी इसे अपनी राजधानी बनाया। साथ ही यह मथुरा कला का प्रसिद्ध केन्द्र था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xiii) एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र

An Important Trade Centre

नगर/टेर:

वर्तमान में यह महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले में स्थित है। यह सातवाहनकाल में प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। यह वस्त्र निर्माण के लिए जाना जाता था। यहाँ से चबूतरे जहाँ ग्रामें एवं सातवाहनों के सिक्के भी प्राप्त हुए हैं।

(xiv) एक गुप्तकालीन स्थल

A site of Guptan period

पद्मावती:

वर्तमान यह मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले में स्थित है। गुप्तों के समय यहाँ नागवंश का शासन था।

गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त-II ने नागवंशीय राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया और साम्राज्य विस्तार में तत्कालीन शक्ति नागों का सहयोग प्राप्त किया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xv) एक चालुक्यकालीन स्थल

A Chalukyan site

(xvi) एक प्राचीन बंदरगाह

An ancient port

भड़ौच:

वर्तमान में यह गुजरात के भरूच जिले में स्थित है। यूनानी ग्रंथों में इसे 'बेरीगाजा' कहा गया है।

यह पश्चिमी भारत का महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। यहाँ से मोती, मलमल, मसाले एवं हाथी दाँत से निर्मित सामग्री ग्रीस भेजी जाती थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xvii) एक युद्ध स्थल
A battlefield

~~बक्सर:~~
~~वर्तमान में पश्चिमी बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में स्थित है। जहाँ पर मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय, बंगाल के नवाब मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं अंग्रेजी कंपनी के मध्य 22 अक्टूबर, 1764 को बक्सर का युद्ध हुआ। जिसमें अंग्रेज विजित हुए।~~

(xviii) एक गुप्तकालीन स्थल
A Guptan site

गया:
यह वर्तमान में बिहार का एक जिला है। समुद्रगुप्त के समय श्रीलंका के शासक मेघवर्ण ने यहाँ समुद्रगुप्त से एक बौद्ध विहार बनवाने का आग्रह किया था। जो चलकर यह एक बौद्ध मंदिर में परिवर्तित हो गया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xix) एक चित्रकला केन्द्र

A centre for painting

अमरावती:

→ वर्तमान में यह आन्ध्रप्रदेश के गुंटूर जिले में स्थित है। ~~[illegible]~~

→ यह सातवाहन शासकों की राजधानी थी।

→ अमरावती स्तूप पर बुद्ध एवं बोधिसत्व के चित्रों को उत्कृष्ट शैली में चित्रण किया गया है।

→ यह बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था।

(xx) एक राजधानी स्थल

A Capital city

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (a) पूर्व मध्यकालीन भारत में सामंतवादी व्यवस्था एक दोषपूर्ण व्यवस्था के रूप में विद्यमान थी। समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिये। 20

The feudal system was present in the form of a defective system in pre medieval India. Critically analyse 20

सामन्तवाद एक पदानुक्रम पर आधारित व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत अधिकारों एवं दायित्वों को स्पष्ट किया जाता है। वस्तुतः पूर्वमध्यकाल में भारत में भूमि के ~~अधीन एक~~ सम्बन्धित एक नवीन वर्ग का उदय हुआ जिन्हें सामन्त कहा गया।

सामन्तवाद राजनीतिक क्षेत्र में छोटी-छोटी राजनीतिक इकाइयों को दर्शाता है तो वहीं आर्थिक क्षेत्र में यह बन्द अर्थव्यवस्था का प्रतीक है। साथ ही सामाजिक क्षेत्र में कृषक दासता का प्रतीक है जिसमें कृषकों का शोषण हुआ।

वास्तव में भारत में सामन्तवाद का विकास मौर्योत्तरकाल में भूमिदान प्रथा के प्रारम्भ होने से हुआ। परवर्ती कालों में भूमिदानग्राहिता में भूमि पर राजस्व, प्रशासनिक, सैनिक अधिकार दिये गये और सामन्तवाद का विकास हुआ।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामन्तवादी व्यवस्था के निम्नलिखित दोष अथवा नकारात्मक प्रभाव रहे जिन्होंने भारतीय सामाजिक - आर्थिक एवं राजनैतिक ढाँचे को शिथिल बना दिया।

राजनैतिक क्षेत्र में:

→ केन्द्रीय शासक का प्रत्यक्ष क्षेत्र सीमित हुआ जिससे चक्रवर्ती राजा की अवधारणा खण्डित हुई।

→ राजा एवं प्रजा के मध्य प्रत्यक्ष संबंध समाप्त हो गए और प्रजा की निष्ठा सामन्तों के प्रति बढ़ी लगी। फलतः सामंत शक्तिशाली होने लगे।

→ ऐसी परिस्थितियों में सामन्तों ने कमजोर शासकों के समक्ष अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी जिससे अनेक क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। जैसे चंदेल, गहड़वाल आदि।

→ सामन्तों के प्रशासनिक अधिकारियों को भूमिदान के रूप में वेतन दिया। फलतः नौकरशाही का सामन्तीकरण हो गया और प्रशासनिक दक्षता का ह्रास हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सामाजिक - आर्थिक क्षेत्र में :-

→ सामन्तों ने विभिन्न उत्पादक वर्गों जैसे - किसानों एवं शिल्पकारों पर अत्यधिक कठोर नियन्त्रण स्थापित किया और अनेक प्रकार के कर आरोपित किये। फलत: व्यापार - वाणिज्य का ह्रास हुआ। इसी कारण नगरों एवं मौद्रिक अर्थव्यवस्था एवं नगरों का अवसान हुआ एवं बन्द अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।

→ सामन्तों के असामन्तीकरण की प्रक्रिया बढ़ने से किसानों का शोषण बढ़ा। फलत: किसान कृषि कार्य से विमुख हुए जिससे एक तरफ तो कृषि उत्पादन में कमी आने से संघ की आर्थिक स्थिति दुर्बल हुई। वहीं दूसरी तरफ युद्ध एवं आक्रमण के समय शोषित - पीड़ित किसानों ने सामन्तों का सहयोग नहीं किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सामन्तवाद एक दोषपूर्ण व्यवस्था थी जिसने भारत को सामाजिक - आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से दुर्बल बना दिया। इसका परिणाम भारतीयों की पराजय एवं तुर्कों की विजय के रूप में आया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) पूर्वमध्यकालीन सामाजिक जीवन में अलगाव एवं विशृंखलता के तत्त्व प्रबल रूप में विद्यमान थे। टिप्पणी कीजिये। 15

Elements of Isolation and Chaos were radically present in pre-medieval social life. Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्ण व्यवस्था :

पूर्व मध्यकाल में चतु: वर्णव्यवस्था विद्यमान थी जिसमें ब्राह्मणों को स्थान सर्वोच्च था। इस काल में ~~[illegible]~~ शूद्रों का रूपान्तरण कृषकों में हुआ। अलबरूनी ने भी शूद्रों को कृषक कहा है।

अलबरूनी के अनुसार इस काल में वैश्य एवं शूद्रों में अन्तर नहीं रह गया था। दोनों को ही वेद सुनने पर जीभ काट दी जाती थी और कान में पिघला शीशा डाल दिया जाता था।

अस्पृश्यता एवं दास प्रथा :

पूर्वमध्यकाल में दास प्रथा प्रचलित थी क्योंकि लेखों, मन्दिरों एवं राजा सामन्तों के यहाँ दासों का उल्लेख मिलता है।

समाज में अस्पृश्यता की भावना थी। फाह्यान ने चाण्डालों के प्रति जिस व्यवहार का उल्लेख किया था, वह यहाँ भी दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नई जातियों का उदय:

पूर्व मध्यकाल में प्रशासन के विवरण को रखने के लिए करणिकों की नियुक्ति की गई जो आगे चलकर वर्ग के रूप में स्थापित हुए और इनमें विवाह, खान-पान एवं रहन-सहन के सम्बन्ध स्थापित होने से ये जाति के रूप में परिवर्तित हो गए।

कायस्थ जाति के उदय से ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों पर चोट पहुँची और सामाजिक वातावरण तनावपूर्ण हुआ।

महिलाओं की स्थिति:

पूर्वमध्यकाल में व्यापार-वाणिज्य एवं आर्थिक गतिविधियों के ह्रास के कारण महिलाओं की स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

इस काल में केवल उच्च वर्ग की महिलाओं को शिक्षा प्राप्ति का अधिकार था। शिक्षा के विषय साहित्य, नृत्य एवं संगीत थे।

इसी तरह उच्च वर्ग की महिलाएँ ही राजनैतिक तथा सैनिक गतिविधियों में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भाग लेती थी। इस काल में गार्गी, अपाला, लोपामुद्रा एवं घोषा जैसी महिलाओं का उल्लेख मिलता है।

बाल विवाह का प्रचलन था। वैधातिथि जैसे स्मृतिकारों के कन्या की विवाह की उम्र अधिकतम 12 वर्ष मानी है।

इसी तरह समाज में विधवाओं की दशा दयनीय थी। उन्हें फूल-माला, रंगीन वस्त्र एवं इत्र के उपयोग करने का अधिकार नहीं था। इस तरह उन्हें कठिन जीवन जीना पड़ता था। फलतः सती प्रथा को बढ़ावा मिला।

इस काल में मंदिरों में देवदासी प्रथा एवं बौद्ध एवं जैन मठों तथा विहारों में तंत्रवाद का प्रचलन था जो नारी शोषण को धार्मिक वैधता प्रदान कर रहा था।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पूर्वमध्यकालीन सामाजिक व्यवस्था सामन्ती ढाँचे पर आधारित थी जिसमें अलगाव एवं पितृसत्तात्मकता के तत्व दिखाई देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(c) क्या यह सत्य है कि चोल साम्राज्य मध्यकालीन दक्षिण भारतीय साम्राज्य की चरम परिणति था? विश्लेषण कीजिये। 15

Is it true that the Chola Empire was the culmination of the Medieval South Indian Empire? Analyze. 15

चोल साम्राज्य की स्थापना विजयालय ने 10वीं शताब्दी के मध्य में की। चोलों का उत्थान पल्लवों के ध्वंसावशेष पर हुआ था। आगे चलकर चोल शासक आदित्य-I ने अपराजित को पराजित कर सम्पूर्ण पल्लव क्षेत्र पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया। इसके पश्चात परान्तक-I ने मदुरै पर विजय प्राप्त की और मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण की।

आगे चलकर चोल शासक राजराज-I ने उत्तरी श्रीलंका पर आक्रमण कर अनुराधापुर को नष्ट कर दिया और पोलन्नरुवा को नई राजधानी बनाई।

राजराज-I ने मालदीव पर भी आक्रमण किया और वहाँ आर्थिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित किए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सबसे महान चोल शासक राजेन्द्र चोल था। उसने शक्तिशाली नौसेना की स्थापना की और बंगाल की खाड़ी को चोल झील में परिवर्तित कर दिया।

उसने द-कुन्नतीला में विजय अभियान किया और शैलेन्द्र शासक की संग्रामविजयतुंगवर्मन को पराजित किया और कदाहा (कडारम जो - जिसमें जावा, सुमात्रा और मलाया शामिल थे) को विजित किया तथा कडारमकोण्ड की उपाधि धारण की।

इसी तरह राजेन्द्र I ने 1022 ई. में गंगा का अभियान किया तथा पाल शासक महिपाल को पराजित किया तथा गंगैकोण्डचोलपुरम् की उपाधि धारण की।

चोल शासक कुलोत्तुंग-I ने चीन के शासकों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये और सम्बन्धों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को मजबूत बनाया।

वास्तव में चोल शासक ने महत्वाकांक्षी दक्षिणी भारत में सर्वाधिक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी जिसमें द.पू. एशिया, मालदीव, श्रीलंका एवं दक्षिणी भारत का क्षेत्र शामिल था।

इस तरह कहा जा सकता है कि अशोक ने जहाँ धम्म नीति के माध्यम साम्राज्य विस्तार किया। वहीं चोल शासकों ने युद्ध नीति से साम्राज्य विस्तार किया। जिससे चोल साम्राज्य मध्यकालीन दक्षिण भारतीय साम्राज्य की चरम परिणति पर पहुँच गया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. (a) भक्ति आंदोलन के तहत महानतम संतों के प्रयासों एवं उपलब्धियों के बीच का अंतर इनकी सफलता पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न है। परीक्षण कीजिये। 20

The difference between the efforts and accomplishments of the greatest saints under the Bhakti movement is a big question mark on their success. Examine. 20

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के संतों ने धर्म एवं समाज में सुधार का प्रयास किया किंतु इन्होंने जो प्रयास किया उनकी तुलना में उपलब्धियाँ सीमित ही रही। इसी आधार पर भक्ति आंदोलन की सफलता पर प्रश्न चिह्न लगाया जाता है।

लेकिन मध्यकालीन युग में भक्ति संतों ने जो प्रयास किये और उन्हें जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई। उन्हें कम आँकना उचित नहीं है। इस दृष्टि से ~~मध्यकालीन~~ भक्ति आंदोलन की सफलताएँ निम्न प्रकार है -

→ मध्यकालीन भक्ति संतों ने समाज में व्याप्त ऊँच-नीच, जात-पात, अस्पृश्यता एवं लैंगिक भेदभाव का विरोध कर एक समतामूलक समाज की स्थापना का प्रयास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ इसी तरह भक्ति संतों ने धार्मिक कर्मकाण्ड बाह्य आडम्बरों एवं अंधविश्वासों के साथ-साथ पुरोहितों के प्रभुत्व का विरोध किया और जनसामान्य को प्रगतिशील बनाने का प्रयास किया।

→ भक्ति संतों ने मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति का सरल मार्ग प्रस्तुत किया और कहा कि ईश्वर के प्रति अटूट प्रेम से मोक्ष प्राप्त कर व्यक्ति जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो सकते है।

→ भक्ति संतो ने गुरु के महत्व पर अत्यधिक बल दिया क्योंकि गुरु अज्ञानता को दूर करता है जो कि मोक्ष प्राप्ति का माध्यम है।

→ इसी तरह कबीर जैसे भक्ति संतों ने जन्मगत एवं जातिगत भेदभाव, साम्प्रदायिकता और सामाजिक आर्थिक ढाँचे का विरोध किया।

→ भक्ति संतो ने अपने उपदेश क्षेत्रीय एवं लोकभाषाओं में दिये। फलत: क्षेत्रीय

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ज्ञान एवं साहित्य को बढ़ावा मिला।

→ भक्ति संतों ने मानवतावाद पर बल देते हुए सभी जीवों का परमात्मा का अंश माना और उनके प्रति दया, प्रेम एवं करुणा भाव रखने पर बल दिये।

→ भक्ति संतों ने हिन्दू-मुस्लिम समन्वय पर बल दिया।

वास्तव में ये सभी प्रयास भक्ति संतो द्वारा मध्यकालीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में किये गये किंतु उन्हें अपने कार्यों में पूर्ण सफलता नहीं मिली।

वास्तव में भक्ति संतों के प्रयासों के बावजूद वर्ग असमानता, एवं जाति व्यवस्था बरकरार विद्यमान थी। सामाजिक एवं आर्थिक असमानता लगातार बढ़ती जा रही थी। इसी तरह अंधविश्वास एवं रुढ़िवादिता में भी मामूली सी कमी आयी। साथ ही हिन्दू-मुस्लिम समन्वय का प्रयास किया गया किंतु यह सफल नहीं हो सका।

इन सीमाओं के बावजूद भी भक्ति आंदोलन की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हो जाती है मध्ययुगीन परिस्थितियों में जो क्रांतिकारी विचार उन्होंने समाज को [illegible] वे आज भी उतने ही [illegible] सांप्रदायिक सौहार्द एवं सद्भाव के लिए आवश्यक हैं।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों ने एक सफल सीमान्त नीति का अनुसरण किया था। आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। 15

The Sultans of Delhi Sultanate followed a successful frontier policy. Evaluate critically. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के समय से ही उत्तर-पश्चिम सीमा से मंगोल आक्रमण का भय था और समय-समय सुल्तानों ने मंगोल आक्रमणों से निपटने के उपाय भी किये किंतु वे पूर्ण रूप से इसमें सफल नहीं हो सके।

इल्तुतमिश :

इल्तुतमिश के समय मंगोल शासक चंगेज खाँ ख्वारिज्म के शासक जलालुद्दीन मांगबरनी का पीछा करते हुए सिंधु तक पहुँच गया और इल्तुतमिश से शरण माँगी किंतु इल्तुतमिश ने शरण देने से इनकार कर नवस्थापित दिल्ली सल्तनत को मंगोल आक्रमण से बचाया।

बलबन :

बलबन ने मंगोल आक्रमण से निपटने के लिए अनेक कदम उठाये -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ उत्तरी - पश्चिमी सीमा पर नवीन दुर्गों का निर्माण करवाया और शक्तिशाली सैन्य छावनियाँ स्थापित की। जैसे - भटिण्डा, सिरसा एवं अबोहर।

→ इसी तरह उसने पुराने दुर्गों की मरम्मत करवायी और शक्तिशाली सैन्य छावनियाँ स्थापित की।

→ बलबन ने उ.प. सीमा की सुरक्षा के लिए योग्य सेनापतियों को भार सौंपा जिसमें उसका भाई शेर खाँ एवं पुत्र शहजादा भी शामिल था।

→ मंगोल आक्रमण से बचने के लिए बलबन साम्राज्य विस्तार की नीति का परित्याग कर दिया और सीमा पर निगरानी हेतु स्वयं दिल्ली रहा।

बलबन के इन उपायों से कुछ समय तक मंगोल आक्रमण नहीं हुए किंतु 1285 ई. में तैमूर के नेतृत्व में मुलतान पर मंगोलों ने आक्रमण किया जिसमें बलबन का पुत्र मारा गया और इसी दुःख में बलबन स्वयं मर गया। इस

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रकार बलबन की मंगोल नीति भिन्न थी।

अलाउद्दीन खिलजी:

अलाउद्दीन खिलजी के समय दिल्ली सल्तनत पर अधिकतम बार मंगोल आक्रमण हुए। मंगोल आक्रमण से बचने के लिए खिलजी ने विशाल स्थायी सेना का गठन किया और सैनिकों को नगद वेतन दिया। अलाउद्दीन की बाजार नियंत्रण नीति भी सैन्य उद्देश्यों से परिचालित थी।

इसी तरह खिलजी ने उ.प. सीमा की रक्षा का भार नुसरत खाँ, उलूग खाँ जैसे सेनानायकों को सौंपा जिन्होंने कई बार मंगोल आक्रमणों का सफलतापूर्वक सामना किया किंतु 1299 ई. में दिल्ली के ऊपर हुए मंगोल आक्रमणों में उलूग खाँ मारा गया।

इस तरह सुल्तानों ने मंगोलों से निपटने के लिए अलग-अलग रणनीति अपनाई किंतु वे इसमें पूर्णतया सफल नहीं हो सके।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 'कल्हण की कृति की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता उसका ऐतिहासिक बोध है।' विश्लेषण कीजिये। 15

'The historical understanding was the most important feature of the work of Kalhan.' Analyse. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कल्हण ने संस्कृत भाषा में 'राजतरंगिणी' की रचना और इसमें पौराणिक युग के लेकर अपने समय तक की घटनाओं का विस्तृत विवरण किया है। कल्हण ने अपना ग्रंथ लोहार वंश के शासक जयसिंह के संरक्षण में लिखा था।

कल्हण ने यह ग्रंथ काव्य शैली में लिखा है और इसमें इतिहासकार के निष्पक्ष होने पर बल दिया। कल्हण ने अपने ग्रंथ में कश्मीरी राजाओं की वंशावलियों को प्रस्तुत किया है ताकि लोग इतिहास से सबक ले सकें। कल्हण का यह दृष्टिकोण धरती के समान दिखाई देता है।

कल्हण ने अपने ग्रंथ लेखन के लिए जनश्रुतियों को आधार बनाया। साथ ही मन्दिरों एवं भवनों पर लिखे लेखों के माध्यम से भी जानकारी प्राप्त की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कल्हण का ग्रंथ 8 सर्गों में विभाजित है। उसने प्रथम से तीसरे सर्ग तक लगभग पिछले 3000 वर्षों का इतिहास लिखा है। वहीं चौथे से छठे सर्ग तक कार्कोट एवं उत्पल वंश के बारे में लिखा है। इसी तरह 7वें एवं 8वें सर्ग में लोहार वंश का इतिहास लेख है। इस तरह कालक्रमानुसार इतिहास लेखन कल्हण के राजतरंगिणी की प्रमुख विशेषता है।

कल्हण जैसे-जैसे अपने युग के नजदीक आते हैं उनकी दृष्टि आलोचनात्मक होती जाती है। उन्होंने कश्मीर के डूम्ब डमार विद्रोह का उल्लेख किया है।

साथ ही कल्हण ने इस बात पर बल दिया है कि शासन को इतना शक्तिशाली अवश्य होना चाहिए ताकि वह असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण स्थापित कर सके।

इसी तरह कल्हण अपराध को राजनीतिक विद्रोह का कारण मानता था। वह खिलार, दिल्ली सल्तनत के अलाउद्दीन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किताबी के राजत्व सिद्धांत में भी दिखाई देता है।

कल्हण ने सैन्यशाही की निन्दा की थी क्योंकि इसने अनिवार्य व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह हुआ। उसने ब्राह्मणों की विकृति की आलोचना की।

सीमाएँ:

→ कल्हण के ग्रंथ में तिथियों को लेकर भ्रम होता है। उसके अनुसार कश्मीर पर 17 शासकों ने 3750 वर्षों तक शासन किया जिसमें एक ने 300 वर्षों तक।

→ इस ग्रंथ में पौराणिकता की भावना दिखाई देती है। कल्हण मौर्य शासकों को कश्मीर से जोड़ा है।

इन सीमाओं के बावजूद भी कल्हण के ग्रंथ का महत्व इस रूप में है कि वह तात्कालीन भारतीयों पर लगे उस आरोप को खारिज करता है कि प्राचीन भारतीय इतिहासबोध से रहित थे। इस दृष्टि से वह तात्कालीन भारत के इतिहास लेखन का सशक्त उदाहरण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) क्या आप इस मत से सहमत हैं कि इस्लाम भारतीय सभ्यता की आत्मा को परिवर्तित करने में असफल साबित हुआ? चर्चा कीजिये। 20

Do you agree with the view that Islam was unsuccessful in changing the soul of Indian civilization? Discuss 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following questions in about 150 words each:

(a) सिंध पर अरबों के शासन के काफी दूरगामी प्रभाव पड़े। विश्लेषण कीजिये।

There have been far-reaching effects of Arab rule over Sindh. Analyse.

सिंध पर अरबों के शासन के राजनीतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं।

राजनीतिक क्षेत्र:

→ यद्यपि राजनीतिक क्षेत्र में कोई तात्कालिक प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि अरब भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने में विफल रहे। लेकिन इसने तुर्क आक्रमण की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

→ मुहम्मद बिन कासिम ने पहली बार भारतीयों पर जजिया कर आरोपित किया।

सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में

→ भारत में खजूर की खेती एवं ऊँटपालन प्रारंभ हुआ।

→ दिरहम जैसी नई मुद्रा का प्रचलन हुआ।

→ कुशल कारीगरों एवं व्यापारियों को

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय समाज में प्रवेश के इस्लामिक विचारधारा भारत में लोकप्रिय हुई और एक सामासिक संस्कृति का विकास हुआ।

→ भारत में अरबी भाषा, शिक्षा एवं साहित्य का प्रसार हुआ। लाहौर इसका प्रमुख केन्द्र बना।

→ अरबों ने भारत से अनेक तत्व ग्रहण किया। ब्रह्मसिद्धांत एवं पंचतंत्र जैसे ग्रंथों का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ। बगदाद भारतीय एवं अरबी संस्कृति का मिलन केन्द्र बन गया। बगदाद में एक बैतुलहिकमा की स्थापना हुई।

→ भारतीय ज्ञान-विज्ञान को अरबों ने प्राप्त किया और यूरोप तक प्रसारित किया। जैसे- शून्य की जानकारी।

इस तरह अरब आक्रमण का तत्काल राजनीतिक प्रभाव की बजाय व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव भारत पर अधिक पड़ा। जिसने न केवल अरबों को बल्कि संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) "अकबर के शासनकाल की प्रशासनिक संस्थाएँ शेरशाह की ऋणी थीं।" विवेचना कीजिये।

"The administrative institution of Akbar regime were obliging of shershah." Discuss.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

शेरशाह को अकबर का पथप्रदर्शक एवं अग्रगामी कहा जाता है। वास्तव में अकबर ने अपने शासनकाल के दौरान शेरशाह की नीतियों एवं कार्यों को व्यापक स्वरूप प्रदान किया जिसे निम्न प्रकार समझा जा सकता है -

अकबर की आइन-ए-दहसाला लगान पद्धति शेरशाह सूरी की जब्ती पद्धति का संशोधित एवं सुधरा हुआ रूप था।

शासन में अकबर की किसानों के हित की अवधारणा, प्रजा कल्याण की भावना इत्यादि भी शेरशाह सूरी के तत्वों से प्रभावित थी। इस तरह अकबर के काल की संस्थाएँ शेरशाह की ऋणी थी।

किंतु यह कथन पूर्णतः सत्य नहीं है। अकबर ने स्वयं की अनेक नवीन संस्थाएँ स्थापित की और

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुगल साम्राज्य को नवीन स्वरूप प्रदान किया।

अकबर ने मनसबदारी एवं जागीरदारी व्यवस्था को एक निष्ठावान एवं संगठित प्रशासनिक वर्ग का निर्माण किया जिससे साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण हुआ। यह व्यवस्था शेरशाह के यहाँ दिखाई नहीं देती है।

इसी तरह अकबर ने अपनी राजपूत नीति एवं धार्मिक नीति के माध्यम से बहुसंख्यक गैर-मुस्लिम प्रजा का सहयोग प्राप्त कर एक राष्ट्रीय शासक बनने का प्रयास किया। यह तत्व शेरशाह की नीति में नहीं दिखाई देता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शेरशाह अकबर का पथप्रदर्शक एवं अग्रगामी था लेकिन पूर्ण रूप से नहीं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) विजयनगर साम्राज्य के गौरवपूर्ण इतिहास का मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिये।
Evaluate the glorious history of the Vijayanagar Empire.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विजयनगर के गौरवपूर्ण इतिहास का आकलन उनके शासकों द्वारा कला, साहित्य एवं संगीत के क्षेत्र में दिये योगदान से किया जा सकता है।

स्थापत्यकला:

इस काल में मन्दिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली का विकास हुआ। कृष्णदेवराय द्वारा बनाये गये विठ्ठल स्वामी का मन्दिर एवं हजार स्तम्भों का मन्दिर सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस काल के मन्दिर स्थापत्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता अलंकृत स्तम्भ है।

साहित्य:

विजयनगर शासन के दौर कन्नड़, तेलुगु, तमिल एवं संस्कृत भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ।

कृष्णदेवराय के दरबार के में तेलुगु के 8 विद्वान रहते थे जिन्हें अष्टदिग्गज कहा जाता था। इनमें से नंदीतिम्मन ने पारिजातहरण, तेनालीराम ने पाण्डुरंग महात्म्य जैसे ग्रंथों की रचना की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृष्णदेवराय स्वयं संस्कृत भाषा में जाम्बवती कल्याणम् एवं तेलुगु भाषा में आमुक्तमाल्यदा नामक ग्रंथों की रचना की।

इस काल में तमिल भाषा में शिवज्ञानबोधम् एवं शिवज्ञान सिद्धियार जैसे ग्रंथों की रचना हुई। वहीं कन्नड़ भाषा में बसवपुराण एवं कर्नाटक शब्दानुशासन जैसे ग्रंथों की रचना हुई।

संगीत:

इस काल में संगीत कला का पर्याप्त विकास हुआ। लक्ष्मीनारायण ने संगीत सूर्योदय एवं गंगादेवी ने मधुराविजय नामक ग्रंथ लिखा।

अर्थव्यवस्था:

कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार थी। व्यापार-वाणिज्य विकसित था। पुर्तगालियों के साथ घोड़ों का व्यापार स्थापित। विजयनगर के शासकों ने सैन्य क्षमता को सुदृढ़ किया। विजयनगर के शासकों ने वराह एवं पैगोडा जैसे सिक्के चलाकर मौद्रिक अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया। इस काल की विकसित अर्थव्यवस्था की अभिव्यक्ति कला एवं साहित्य के क्षेत्र में दिखाई दे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि अकबर की राजपूत नीति पूर्णतया सफल साबित हुई? टिप्पणी कीजिये।
Do you agree with the statement that the Rajput policy of Akbar was completely successful? Comment.

अकबर की राजपूत नीति की सफलता का मूल्यांकन से पूर्व हमें अकबर की राजपूत नीति के उद्देश्यों को जानना आवश्यक है-

अकबर की राजपूत नीति के निम्न उद्देश्य थे -

→ राजपूतों का सामरिक अथवा शुद्ध राजनैतिक सैनिकीकरण था। वस्तुतः राजपूत शक्ति का केन्द्र राजस्थान था और यहाँ सिंध, मालवा, गुजरात एवं उत्तरी-पश्चिमी सीमांत-प्रांत पर नियंत्रण स्थापित किया जा सकता था।

अकबर ने राजपूतों को इन क्षेत्रों में सेनापति बनाकर भेजा और नियंत्रण स्थापित किया। इस दृष्टि से उसकी राजपूत नीति सफल रही।

→ अकबर राजपूतों के चारित्रिक गुणों (वफादारी, साहस एवं निष्ठा) को मुगल साम्राज्य के लिए आवश्यक मानता था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

अतः उसने राजपूतों को मुगल प्रशासन एवं शासन का हिस्सा बनाया। राजपूत जो पिछले 700 वर्षों तक इस्लाम के विरुद्ध तलवार उठाते हुए थे अब अकबर के रक्षक हो गए और उन्होंने मुगल साम्राज्य के विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साथ ही अकबर को बहादुर योद्धाओं के रूप में राजपूतों की सेवाएँ मिलीं। साथ ही राजपूतों को मुगल प्रशासन में शामिल करके मुगल, अफगानी एवं उज़्बेक अमीरों का प्रति संतुलन किया जा सका। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि राजपूत नीति सफल अकबर की ~~कूटनीतिक~~ रही।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) अलाउद्दीन खिलजी द्वारा आर्थिक सुधारों को अपनाने की प्रेरणा उसके राजनीतिक सिद्धांत में निहित थीं। विवेचना कीजिये। 15

Inspiration for adopting economical reforms by Alauddin Khilji was inherent within his political policy. Elucidate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वास्तव में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने राजनीतिक सिद्धांत में निरंकुशता एवं साम्राज्य विस्तार को शामिल किया था। चूंकि इसके लिए बड़ी विशाल सेना की आवश्यकता थी और यह तभी संभव था जब अत्यधिक धन हो। चूंकि उस समय राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूराजस्व था। अतः उसने भूराजस्व सुधार पर दिया।

अलाउद्दीन खिलजी के भूराजस्व सुधारों का उद्देश्य राज्य की आय में वृद्धि करना, मध्यस्थों का उन्मूलन करना एवं धन के संकेन्द्रण को रोककर उपद्रव एवं विद्रोहों को समाप्त करना था।

अलाउद्दीन ने भूराजस्व सुधारों के अंतर्गत इक्ताओं का पुनर्ग्रहण कर खालसा भूमि में परिवर्तित कर दिया। फलतः राज्य की आय में वृद्धि हुई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
...foundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

साथ ही उसने भूमि की मापकर लगान का निर्धारण किया तथा 'बिस्वा' को भूमि की माप का आधार बनाया। अलाउद्दीन की यह पद्धति मसाहत कहलाती है।

उसने उत्पादन का 50% लगान निर्धारित किया जो दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) क्या आप इस कथन से सहमत हैं कि मुगल जागीरदारी व्यवस्था में सृजनात्मकता एवं विघटन दोनों के ही तत्व अन्तर्निहित थे? चर्चा कीजिये। 20

Do you agree with the statement that the elements of both the creativity and the dissolution were implicit in the Mughal jagirdari system? Discuss. 20

मुगल शासक ने अकबर ने मुगल प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए जागीरदारी प्रथा को प्रारंभ किया था।

जागीरदारी व्यवस्था मनसबदारी व्यवस्था से ही जुड़ी हुई थी। जिन मनसबदारों को वेतन जागीर के रूप में दिया जाता था उन्हें जागीरदार कहा जाता था। जागीरदारी व्यवस्था के अन्तर्गत प्रशासनिक अधिकारियों को भूखण्ड के राजस्व का आवंटन किया जाता था।

जागीरदारी व्यवस्था में सृजनात्मकता के तत्व:-

→ मुगल प्रशासनिक व्यवस्था सुदृढ़ हुई जो ब्रिटिश सिविल सेवा के इस्पाती ढांचे के समान थी।

→ एक संगठित एवं निष्ठावान प्रशासनिक अधिकारियों का वर्ग तैयार हुआ जिससे साम्राज्य सुदृढ़ हुआ।

→ जागीरदार आर्थिक रूप संपन्न वर्ग था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अतः इनकी जीवनशैली एवं कला की वस्तुओं की आपूर्ति से व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ीं। फलतः नगरीकरण को बढ़ावा मिला।

→ विभिन्न क्षेत्र एवं धर्मों के लोगों को जागीरदार नियुक्त किया गया जिससे राजनीतिक एकीकरण प्रारंभ हुआ।

→ विभिन्न धर्मों एवं लोगों के विचारों, खान-पान, रहन-सहन आदि में समन्वय हुआ। फलतः एक सामासिक संस्कृति का विकास हुआ। उदाहरण के लिए :- राजपूत चित्रकला, स्थापत्यकला का प्रभाव मुगल कला पर भी पड़ा।

जागीरदारी व्यवस्था में विघटन के तत्व:

इतिहासकार सतीश चन्द्र के अनुसार यह जागीर व्यवस्था मुगल साम्राज्य के विघटन का कारण बनी। उन्होंने जागीरदारी संकट को मुगल साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी ठहराया है। वस्तुतः जागीरदारी संकट प्रबंधन की अकुशलता को दर्शाता है।

औरंगजेब ने दक्कनी अमीरों को अपने पक्ष में करने के लिए जागीरें प्रदान

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करने का आश्वासन दिया। किंतु औरंगजेब के पास समय न था। यह स्थिति जागीरें कम और प्राप्त करने वाले अधिक थे।

ऐसी परिस्थिति में पुराने जागीरदारों से जागीर छीनकर नये जागीरदारों को वितरित की गई। यह प्रक्रिया वास्तव में शाहजहाँ के समय से ही प्रारंभ हो गई थी।

शाहजहाँ ने पूना की जागीर शाहजी भोंसले से छीनकर जहाँ खाँ को दे दी थी जिससे शाहजी भोंसले असंतुष्ट हो कर बीजापुर की सेवा में चले गए।

इस तरह जागीरों के अधिग्रहण एवं फेरबदल से जागीरदार असंतुष्ट हो गए और उन्होंने राज्य के विरुद्ध विद्रोह भड़काया। अतः जागीरें जोर तलब जागीरों में परिवर्तित होने लगी। फलतः राजस्व कम होने से राज्य की आर्थिक स्थिति दुर्बल हुई और मुगल राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त हो गया।

इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि जागीरदारी व्यवस्था में हस्तांतरण एवं विघटन होने तक

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) 'मुगल शासनकाल सांस्कृतिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों का काल था।' विवेचना कीजिये। 20

'Mughal rule was a period of remarkable achievements in every area of cultural life.' Explain. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)